**रामजी की सेना चली, रामजी की सेना चली**

पापियों के नाश को ………….
धर्मं के प्रकाश को ……….
पापियों के नाश को, धर्मं के प्रकाश को
रामजी की सेना चली, रामजी की सेना चली
श्री रामजी की सेना चली, रामजी की सेना चली.
पाप अनाचार में, घोर अन्धकार में
एक नई ज्योति जली, एक नई ज्योति जली
श्री रामजी की सेना चली, रामजी की सेना चली.
निशिचर हीन करेंगे धरती, यह प्राण है श्री राम का
जब तक काम न पूरण होगा नाम नही विश्राम का
उसे मिटानें चलें के जिसका मंत्र वयम रक्षाम का
समय आचाला निकट राम और रावण के संग्राम का
समय महा संग्राम का
तीन लोक धन्य हैं ……......
देवता प्रस्सन्न हैं ..........
तीन लोक धन्य हैं, देवता प्रस्सन्न हैं
आज मनोकामना फली, आज मनोकामना फली
श्री रामजी की सेना चली, रामजी की सेना चली.

रामचन्द्रजी के संग लक्ष्मण कर में लेकर बाण चले
लिए विजय विश्वास ह्रदय में संग वीर हनुमान चले
सेना संग सुग्रीव, नील, नल, अंगद छाती तान चले
उसे बचाए कौन के जिसका वध कराने भगवान चले
वध कराने भगवान चले
आगे रघुनाथ हैं ……..
वीर साथ साथ हैं ……….
आगे रघुनाथ हैं, वीर साथ साथ हैं
एक से एक बलि, एक से एक बलि
श्री रामजी की सेना चली, रामजी की सेना चली.

प्रभु लंका पर डेरा डाले, जब महासागर पार हो
कब हो सफल अभियान हमारा, कब सपना साकार हो
पाप अनीति मिटे धरती से, धर्मं की जाया जाया कार हो
कब हो विजयी राम हमारे, कब रावण की हार हो
कब रावण की हार हो
राम जी से आस है ..........
राम पे विश्वास है .......
राम जी से आस है, राम पे विश्वास है
राम जी करेंगे भली, राम जी करेंगे भली
श्री रामजी की सेना चली, रामजी की सेना चली.
हर हर महादेव, हर हर महादेव
जाया भवानी, जाया भवानी, जाया भवानी

Paapiyon ke naash ko ………….
Dharma ke prakaash ko ……….
Paapiyon ke naash ko, Dharma ke prakaash ko
Raamji ki sena chali, Raamji ki sena chali
Shri Raamji ki sena chali, Raamji ki sena chali.
Paap anaachaar mein, ghor andhakaar mein
Ek nayi jyoti jali, ek nayi jyoti jali
Shri Raamji ki sena chali, Raamji ki sena chali.
Nishichar heen karenge dharati, yeh pran hai Shri Raam ka
Jab tak kaam na puran hoga naam nahi vishram ka
Use mitanein chalein ke jiska mantra vayam rakshaam ka
Samay aachala nikat Raam aur Raavan ke sangraam ka
Samay maha sangraam ka
Teen lok dhanya hain ……......
Devata prassanna hain ..........
Teen lok dhanya hain, Devata prassanna hain
Aaj manokaamana phali, aaj manokaamana phali
Shri Raamji ki sena chali, Raamji ki sena chali.

Raamchandraji ke sang Lakshman Kar mein lekar baan chale
Liye vijaya vishwas hriday mein sang veer Hanumaan chale
Sena sang Sugreev, Neel, Nal, Angad chaati taan chale
Use bachaaye kaun ke jiska vadh karane Bhagawaan chale
Vadh karane Bhagawaan chale
Aage Raghunaath hain ……..
Veer saath saath hain ……….
Aage Raghunaath hain, Veer saath saath hain
Ek se ek bali, Ek se ek bali
Shri Raamji ki sena chali, Raamji ki sena chali.

Prabhu Lanka par dera daale, jab mahasaagar paar ho
Kab ho saphal abhiyaan hamaara, kab sapna saakaar ho
Paap aneeti mite dharati se, dharma ki jaya jaya kaar ho
Kab ho vijayi Raam hamaare, kab Raavan ki haar ho
Kab Raavan ki haar ho
Raam ji se aas hai ..........
Raam pe vishwas hai .......
Raam ji se aas hai, Raam pe vishwas hai
Raam ji karenge bhali, Raam ji karenge bhali
Shri Raamji ki sena chali, Raamji ki sena chali.
Har Har Mahaadev, Har Har Mahaadev
Jaya Bhavaani, Jaya Bhavaani, Jaya Bhavaani

-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------- मन समर्पित, तन समर्पित, और यह जीवन समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती तुझे कुछ और भी दूं |

माँ तुम्हारा ॠण बहुत है, मैं अकिंचन,
किन्तु इतना कर रहा फिर भी निवेदन,
थाल में लाऊँ सजा कर भाल जब,
स्वीकार लेना  दया कर वह समर्पण,
गान अर्पित, प्राण अर्पित रक्त का कण कण समर्पित ||1||

माँज दो तलवार को लाओ न देरी,
बाँध दो कसकर क़मर पर ढाल मेरी,
भाल पर मल दो चरण की धूल थोड़ी,
शीश पर आशीष की छाया घनेरी,
स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित, आयु का क्षण-क्षण समर्पित ||2||

तोड़ता हूँ मोह का बन्धन, क्षमा दो,
गांव मेरे द्वार घर आंगन क्षमा दो,
आज सीधे हाथ में तलवार दे दो,
और बायें हाथ में ध्वज को थमा दो,
यह सुमन लो, यह चमन लो, नीड़ का तृण-तृण समर्पित ||3||

----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

भारत वंदे मारतम् जय, भारत वंदे मातरम्।।
भारत वंदे मातरम् जय, भारत वंदे मातरम्।।

रुक ना पाए तू्फानों में, सबके आगे बढ़े कदम
जीवन पुष्प चढ़ाने निकले माता के चरणों में हम।। वंदे मातरम।।1।।

मस्तक पर हिमराज विराजित, उन्नत माथा माता का।
चरण धो रहा विशाल सागर, देश यही सुंदरता का।
हरियाली साड़ी पहने मां, गीत तुम्हारे गायें हम।। वंदे मातरम्।।2।।

नदियों की पावन धारा है, मंगल माला गंगा की।
कमरबंद है विंध्याद्रि का, सातपुड़ा की श्रेणी की।
सह्याद्रि का वज्रहस्त है, पौरुष को पहचानें हम।। वंदे मातरम्।।3।।

नहीं किसी के सामने हमने, अपना शीश झुकाया है।
जो हमसे टकराने आया, काल उसी का आया है।
तैरा वैभव सदा रहे माँ, विजय ध्वजा फहरायें हम।। वंदे मातरम्।।4।।

-----------------------------------------------------------------------------------------

अनेकता में एकता-हिन्द की विशेषता,
एक राह के हैं मीत, गीत एक राग के,
एक बाग के हैं फूल,  फूल एक हार के,
देखती है यह जमीन, आसमान देखता,
आसमान देखता, आसमान देखता।।1।।

एक देश के हैं हम, रंग भिन्न-भिन्न हैं,
एक जननी भारती के कोटि सुत अभिन्न हैं,
कोटि जीवन बालकों में ब्रह्म एक खेलता,
ब्रह्म एक खेलता, ब्रह्म एक खेलता।।2।।

कर्म है बँटे हुए पर एक मूल मर्म है,
राष्ट्र भक्ति ही हमारा एक मात्र धर्म है।
कण्ठ-कण्ठ देश का एक स्वर बिखेरता,
एक स्वर बिखेरता, एक स्वर बिखेरता।।3।।

एक लक्ष्य और एक प्रण से हम जुटे हुए
एक भारती की अर्चना में लगे हुए।
कोटि-कोटि साधकों का एक राष्ट्र देवता,
एक राष्ट्र देवता, एक राष्ट्र देवता।।4।।

------------------------------------------------------------------------------------------

जननी जन्मभूमि, स्वर्ग से महान है।
इसके वास्ते ये तन है, मन है और प्राण हैं।।

इसके कण-कण में लिखा राम-कृष्ण नाम है।
हुतात्माओं के रूधिर से भूमि शस्य-श्याम है।
धर्म का ये धाम है, सदा इसे प्रणाम है।
स्वतंत्र है धरा यहां, स्वतंत्र आसमान है।
जननी जन्मभूमि, स्वर्ग से महान है।।1।।

इसकी आन पर कभी जो बात कोई आ पड़े।
इसके सामने जो जुल्म के पहाड़ हों खड़े।।
शत्रु सब जहान हों, विरूद्ध विधि-विधान हो,
मुकाबला करेंगे जब तक जान में ये जान है।
जननी जन्मभूमि, स्वर्ग से महान है।।2।।

इसकी गोद में हजारों गंगा-यमुना झूमती।
इसके पर्वतों की चोटियां गगन को चूमती।।
भूमि ये महान है, निराली इसकी शान है।
इसकी जय-पताका ही स्वयं विजय-निशान है।
जननी जन्मभूमि, स्वर्ग से महान है।।3।।

 --------------------------------------------------------------------------------------------

यह उथल पुथल उत्ताल लहर पथ से न डिगाने पाएगी।
पतवार चलाते जाएंगे, मंजिल आएगी आएगी।

लहरों की गिनती क्या करना, कायर करते हैं करने दो,
तूफानों से सहमें हैं जो, पल-पल मरते हैं मरने दो।
चिर नूतन पावन बीज लिए, मनु की नौका तिर जाएगी।।1।।
मंजिल आएगी आएगी .........।

इस धरती में शक हूण मिटे, गजनी गौरी और अब्दाली।
पश्चिम की लहरें लौट गयी, ले ले अपनी झोली खाली।
पूंजी शाही बर्बरता सब, ये धरती उदर समाएगी।।2।।
मंजिल आएगी आएगी .........।

अनगिनत संकट जो झेल बढ़ा, वह यान हमारा अनुपम है।
नायक पर है विश्वास अटल, उर में बाहों में दम खम है।
यह रैन अंधेरी बीतेगी, उषा जय मुकट  चढ़ाएगी।।3।।
मंजिल आएगी आएगी .........।

----------------------------------------------------------------------------------------------

निर्माणों के पावन युग में हम चरित्र निर्माण न भूलें।
स्वार्थ समाधान की आँधी में वसुधा का कल्याण न भूलें।।

माना अगम अगाध सिंधु है, संघर्षों का पार नहीं है,
किन्तु डूबना मझधारों में, साहस को स्वीकार नहीं है,
जटिल समस्या सुलझाने को नूतन अनुसंधान न भूले।।1।।

शीतल विनय आदर्श श्रेष्ठता तार बिना झंकार नहीं है,
शिक्षा क्या स्वर साध सकेगी?  यदि नैतिक आधार नहीं है,
कीर्ति कौमुदी की गरिमा में संस्कृति का सम्मान न भूले।।2।।

आविष्कारों की कृतियों में, यदि मानव का प्यार नहीं है,
सृजनहीन विज्ञान व्यर्थ है, प्राणी का उपकार नहीं है,
भौतिकता के उत्थानों में, जीवन का उत्थान न भूलें।।3।।

---------------------------------------------------------------------------------------------------

संगठन गढ़े चलो, सुपंथ पर बढ़े चलो,
भला हो जिसमें देश का, वो काम सब किए चलो।।

युग के साथ मिल के सब, कदम बढ़ाना सीख लो,
एकता के स्वर में गीत गुनगुनाना सीख लो,
भूल कर भी सुख में जाति, पंथ की न बात हो,
भाषा प्रांत  के लिए, कभी न रक्तपात हो,
 फूट का भरा घड़ा है, फोड़ कर बढ़े चलो।।
भला हो जिसमें देश का, वो काम सब किए चलो।।

आ रही है आज चारों ओर से यही पुकार,
हम करेंगे त्याग मातृभूमि के लिए अपार,
कष्ट जो मिलेंगे मुस्कुरा के सब सहेंगे हम,
देश के लिए सदा जिएंगे और मरेंगे हम,
देश का ही भाग्य अपना भाग्य है ये सोच लो।।
भला हो जिसमें देश का, वो काम सब किये चलो।।

-------------------------------------------------------------------------------------------------------------

युगों-युगों से यही हमारी बनी हुई परिपाटी है।
खून दिया है मगर नहीं दी कभी देश की माटी है।

इस धरती ने जन्म दिया है यही पुनीता माता है।
एक प्राण दो देह सरीखा उससे अपना नाता है।
यह धरती है पार्वती मां यही राष्ट्र शिव शंकर है।
दिग्मंडल सांपों का कुंडल कण-कण रूद्र भयंकर है।।
यह पावन माटी ललाट की ललित ललाम ललाटी है।
खून दिया है मगर नहीं दी कभी देश की माटी है।
युगों-युगों से यही हमारी बनी हुई परिपाटी है।।1।।

इसी भूमि-पुत्री के कारण भस्म हुई लंका सारी
सुंई नोंक भर भू के पीछे हुआ महाभारत भारी।।
पानी सा बह उठा लहू फिर पानीपत के आंगन में।
बिछा दिए रिपुओं के शव थे उसी तराइन के रण में।।
पृष्ठ बाँचती इतिहासों के अब भी हल्दीघाटी है।
युगों-युगों से यही हमारी बनी हुई परिपाटी है।।2।।

सिक्ख मराठे राजपूत क्या बंगाली क्या मद्रासी।
इसी मंत्र का जाप कर रहे युग-युग से भारतवासी।।
बुंदेले अब भी दुहराते यही मंत्र है झांसी में।
देंगे प्राण न देंगे माटी गूंज रहा है नस नस में।।
शीश चढ़ाया काट गर्दनें या अरि-गर्दन काटी है।
खून दिया है मगर नहीं दी कभी देश की माटी है।
युगों-युगों से यही हमारी बनी हुई परिपाटी है।।3।।

--------------------------------------------------------------------------------------------------

**एक नया इतिहास रचें हम एक नया इतिहास।**
डगर-डगर सब दुनिया चलती हम बीहड़ में पन्थ बनायें।
मंजिल चरण चूमने आये हम मंजिल के पास न जायें।
धारा के प्रतिकूल नाव खे एक नया विश्वास रचें हम।
एक नया इतिहास रचें हम एक नया इतिहास।।1।।

दूर हटाकर जग के बंधन बदलें हम जीवन की भाषा।
छिन्न-भिन्न करके बंधन बदलें हम जीवन परिभाषा।
अंगारों में फूल खिलाकर एक नया मधुमास रचें हम।
एक नया इतिहास रचें हम एक नया इतिहास।।2।।

अम्बर हिले धरा डोले पर हम अपना पन्थ न छोड़ें।
सागर सीमा भूले पर हम अपना ध्येय न छोड़ें।
स्नेह प्यार की वसुन्धरा पर एक नया आकाश रचें हम।
एक नया इतिहास रचें हम एक नया इतिहास।।3।।

 ------------------------------------------------------------------------------------

जाग उठा है आज देश का वह सोया अभिमान।
प्राची की चंचल किरणों पर आया स्वर्ण विहान।।

स्वर्ण प्रभात खिला घर-घर में जागे सोये वीर
युद्धस्थल में सज्जित होकर बढ़े आज रणधीर
आज पुनः स्वीकार किया है असुरों का आह्वान।। जाग उठा...

सहकर अत्याचार युगों से स्वाभिमान फिर जागा
दूर हुआ अज्ञान पार्थ का धनुष-बाण फिर  जागा
पांचजन्य ने आज सुनाया संस्कृति का जयगान।। जाग उठा...

जाग उठी है वानर-सेना जाग उठा वनवासी
चला उद्धि को आज बाँधने ईश्वर का विश्वासी
दानव की लंका में फिर  से होता है अभियान।। जाग उठा...

खुला शम्भु का नेत्र आज फिर  वह प्रलयंकर जागा
तांडव की वह लपटें जागी वह शिवशंकर जागा
ताल-ताल पर होता जाता पापों का अवसान।। जाग उठा...

ऊपर हिम से ढकी खड़ी हैं वे पर्वत मालाएँ
सुलग रही हैं भीतर-भीतर प्रलयंकर ज्वालाएँ
उन लपटों में दिख रहा है भारत का उत्थान।। जाग उठा...

-------------------------------------------------------------------------------------------